हिंदी नाटको में देशभक्ती से प्ररित नारी

डॉ.प्रतिभा आनंदराव जावळे
हिंदी विभाग,
तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, बारामती
Email Id : pratibhajawale16@gmail.com
भ्रमणभाष : ९८६०२२८३२

भारत एक ऐसा देश है जहाँ की सांस्कृतिक परंपरा महिलाओं को काफी ऊंचा स्थान प्रदान करती हैं । अपने त्याग एवं बलिदान के स्वभाव के कारण महिलाएं परिचित हैं। अपने पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए अपने साहस, त्याग, बलिदान से राष्ट्रीय आंदोलन में भी सक्रिय होती दिखाई देती हैं । अपनी देशभक्ती का परिचय उसने दिया ही है। प्रथमता राष्ट्रीय आंदोलन की गतिविधी को जानना महत्त्वपूर्ण हैं ।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम भारत के इतिहास में सबसे महत्त्वपूर्ण प्रगती में से एक हैं। स्वतंत्रता आंदोलन में अनेक लोग शहीद हो गए । स्वतंत्रता आंदोलन से भारतीयों के दिल और दिमाग में देश प्रेम की भावना ओत-प्रेत दिखाई देती हैं । हिंदी साहित्य ने भारतीय लोगों के मन में देश प्रेम की भावना को अधिक जागृत किया । 'मेरा रंग दे बसंती चोला' 'अपनी आजादी को हम हरगीज मिटा सकते नहीं सर कटा सकते है लेकिन सर झुका सकते नहीं' आदी अनेक गीतों के कारण देशभक्ती देश प्रेम की भावना भारतीयों के मन में अभी भी जागृत होती हैं। एक तरफ सामाजिक बदलती गतिविधी और दूसरी तरफ देशभक्ती और राष्ट्रीयता की प्रखर अभिव्यक्ती अभिव्यक्त होती रही हैं । हिंदी के समस्त साहित्य ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं - ''इस समय का समाज परंपरागत सामन्ती मूल्य और आधुनिक मूल्यों के टकराहट को मेहसूस करने लगा था । इस समय सचेत लेखकों ने इन दोनों वर्ग की अतिवादिता पर प्रहार किया है । एक और वे परंपरावादी समाज की धार्मिक रूढीवादी अशिक्षा, कर्मकांड, विधवा विवाह, बालविवाह, अस्पृश्यता, बहुविवाह, आदी का तीव्र विरोध करते हैं तो दूसरी ओर अंग्रेजी सभ्यता के भष्टाचार, व्यभिचार, नारी विहार, पुलिस अत्याचार, शिक्षितों की बेकारी, फॅशन आदी सामाजिक समस्याओं को अभिव्यक्त करते हैं।''[१]

साहित्य में समाज की इन समस्याओं को चित्रित किया हैं । साथ ही भारतीयों के मन में जागृत देशभक्ती की भावना को बढावा दिया हैं । स्वतंत्रता के बाद महत्त्वपूर्ण जो घटना हो चुकी उसकी तरफ भी ध्यान देना आवश्यक है । उन घटनाओं में २६ जनवरी १९५० को भारतीय संविधान पारित हुआ । इस संविधान में जनता के अधिकार तथा एकात्मकता को प्रमुख स्थान दिया है । स्वतंत्र भारत को पहला सदमा पहुंचा अक्तूबर १९६२ में चीन ने भारत पर हमला किया और उसी वर्ष नवंबर में चीन ने दूसरा हमला किया । १९६५ में कश्मीर को लेकर भारत और पाकिस्तान के बीच जंग हुई । दुसरी जंग १९७१ में भारत और पाकिस्तान में हुई । बांग्लादेश का उदय और पाकिस्तान की हार इन घटनाओं के कारण फिर से भारतीयों के

Principal
Tuljaram Chaturchand College
Baramati
TULJARAM CHATURCHAND COLLEGE BARAMATI

मन में देशभक्ति की भावना जागृत हुई । इस देश भक्ति की भावना को ओर अधिकार प्रबल करने का काम साहित्य ने किया ।

पुरूषों ने स्वतंत्रता संग्राम में योगदान दिया ही है साथ ही नारी के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता । हम देखते है कि नारी के विकास का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं जो अछूता रहा है । भारत में ही नहीं पूरे विश्व में नारी ने अपनी विजय पताका फहराई हैं । नारी के स्वतंत्रता और शिक्षा के कारण वह स्वयं अपने अधिकार और कर्तव्यों के प्रति जागरूक रही हैं। हम भारतीय है इसका अभिमान मन में रखते हुए हर भारतीय अपने देशाभिमान को बरकरार रखता है । साहित्य में इस देशभक्ति की भावना को बढावा दिया ।'' स्वातंत्रोत्तर कथालेखन स्त्री ने निज व्यक्तित्व विकास और विभिन्न आंदोलनों से नए तेवर अपनाता अधिक समृध्द होकर नई मुद्रा लेकर सामने आया है ।''[२]

कथा के साथ अनेक कवींयों के काव्य में देशभक्ति की भावना अधिक प्रभावी व्यक्त होती दिखाई देती है । काव्य के क्षेत्र में सुभद्राकुमारी चौहान के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता । उस समय सुभद्राकुमारीजी ने दोहरा दायित्व बखूबी निभाया है । एक और उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में सहयोग दिया तो दूसरी और ओजस्वी एवं राष्ट्रीय चेतना से भरपूर कविता लिखी । आपकी 'झांसी की राणी', 'विंरो का कैसा हो वसंत' आदी कविताओं से राष्ट्र के प्रति देशभक्ति की भावना जागृत होना स्वाभाविक है । स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटकों में देशभक्ती से प्रेरित नारी के कई रूप देखने को मिलते हैं । प्रथमतः देशभक्ति तथा देश प्रेम के संदर्भ में-अपने देश से प्रेम करना और सदा उसका कल्याण सोचना राष्ट्रभक्ती या देशभक्ती कहलाती है ।' स्वातंत्र्योत्तर नाटको में देशाभिमान का चित्रण कई नाटककारों ने किया दिखाई देता हैं । १९६२ में भारत और चीन के युध्द की पार्श्वभूमी में शिवप्रसाद सिंह द्वारा लिखित 'घाटियां गुंजती है' नाटक महत्त्वपूर्ण है । चीन का भारत पर आक्रमण इस नाटक का मूल विषय है। प्रस्तृत नाटक में क्यूला एक आदिवासी नारी हैं । जवान टूराँ की पत्नी है । उसे अपने पति पर गर्व है । वह समझती हैं कि उसका पति राष्ट्रभक्त है । राष्ट्र की सेवा करने के लिए गया है । क्युला का यह विश्वास एक दिन टूट जाता हैं । उसे मालूम होता है कि उसका पति चीनीयों से मिला है, गद्दार है । अपने पति की इस गद्दारी और धोकेबाजी क्युला बर्दाश्त नहीं कर पाती और उसमें ही वह पागल बन जाती है । ऐसे देशद्रोही पति के बच्चे की माँ बनना भी उसे स्वीकार नहीं है । अपने ससुर से कहती है, ''सब समझती हूँ । तुम इसलिए न रोते हो बापू की मैं एक देशद्रोही, धोकबाज के बच्चे की माँ होने वाली हूं । हा-हा-हा देशद्रोही की हा-हा-हा धोकेबाज था ।[३] धोकेबाज था । और चिल्लाती हुई भागती है । क्यूला के मन को चोट पहुंचती है । पति की देश के प्रति गद्दारी उसे पागल कर देती है । सचमुच क्यूला कि यह देशभक्ति, देशाभिमान महान हैं। ज्ञानदेव अग्निहोत्री का 'नेफा की एक शाम' की शिकाकाई आदिवासी नारी है। चीनी आक्रमण के समय तवांग से भागकर आयी हुई वह अठराह वर्षीय युवती है, उसका मकसद हैं, चीनी सैनिको से बदला लेना । अपने पूरे परिवार का विनाश वह

Principal
Tuljaram Chaturchand College
Baramati
TULJARAM CHATURCHAND COLLEGE BARAMATI

अपनी आंखो से देखती है । बदले की आग में झुलसती है । आदिवासियों के सरदार गोगा तथा देवल उसे चीनीयों की चौकी पर भेज कर वहाँ की रसद, गोला बारूद तथा फौजीयों का पता लगाने को भेजते हैं। शिकाकाई विश्वास भरे स्वर में कहती है - ''शिकाकाई इतनी आसानी से नहीं मरेगी देवल। मैं यह काम जरूर पूरा करूंगी (गोगा से) वह जगहा कहाँ है?'' शिकाकाई के संवाद चीनी सैनिकों से बदले की भावना व्यक्त करते है । शिकाकाई निडरता से यह काम करने को तैयार है। देशभक्ती की भावना अपने व्यक्तित्व से चित्रित होती है । इस नाटक में माताई एक ऐसी माँ है, जो अपने बेटों को देश सेवा के लिए कुर्बान करती है । माताई एक आदिवासी नारी है । देवल और नींमो उसके शूर बेटे है । पहिले तो वह अपने बेटों को समझाती है कि दुश्मन को प्यार से जितना चाहिए । अंततः उसके विचार में बदलाव आता है वह समझती है कि दुश्मन दुश्मन होता है । अपने बेटों की चीनी दुश्मन वांगचू से बचाने के लिए उसकी हत्या कर देने में अपने बेटों को साथ देती है । वह कहती है ''भूखे और नंगे रहते ही लडाईयॉ लडी जाती है।''[५] देशप्रेम की भावना उसमें दिखाई देती है । रामवृक्ष बेनापुरी का 'अंम्बपाली' नाटक देशभक्ती का चित्रण करता है । इस नाटक में देशभक्ती का एक महान चरित्र अंम्बपालि का है। जिसमें वैशाली नगर की अम्बपाली नृत्य जैसे निम्न स्तर का काम करनेवाली एक नर्तकी है। अंम्बपालि का सौंदर्य अप्रतिम है । मगध सम्राट अजातशत्रू वैशाली नगर को अपने राज्य में समाविष्ट करना चाहते है । अम्बपाली के प्रति प्रेमभाव मगध सम्राट व्यक्त कर देते है । अपने वृज्जिसंघ को किसी की गुलामी में रखना अम्बपाली को पसंद नहीं है। अम्बपाली मगध सम्राट के प्रेम को ठुकराकर स्वतंत्र राज्य घोषित करती है । अम्बपाली की देशभक्ती उसके व्यक्तित्व से झलकती है । भगवान बुध्द के विचारों से प्रभावित होकर मगध सम्राट का अभिमान तोडते हुए वह कहती है, ''बल सिर्फ तलवारों और धनुष्य में नहीं है, मगधपती कुछ ऐसी ताकते भी है जिनके सामने तलवारें मोम की तरह गल जाती है और धनुष्य तिनके की तरह टूट जाते है । क्या आप भगवान बुद्‌ध के निकट धनुष्य और तलवारें लेकर गए थे ।''[६] युद्‌ध से मनुष्य को जीता नहीं जाता उसमें तो मनुष्य का विनाश है । अहिंसा सबसे बडा धर्म है । हरिकृष्ण प्रेमी का 'संरक्षक' नाटक में दुर्गा अपने मन में दासीपुत्र तथा निम्न वर्ग का होने एहसास जताती है । अपने राज्य तथा अपने देश के प्रति उसे प्रेम है । अपना वास्त्विक परिचय वह खुद देती है, ''मै हूं दुर्गा झांबुआ नेरश की दासी पुत्री एक नीच नारी।''[७] दुर्गा का परिचय प्राप्त करने पर महाराज कहते है, 'दुर्गा जन्म के कारण कोई ऊंच नीच नहीं होता । कर्म ही उसकी कसौटी है । तुम सचमुच महान हो''।[८] दुर्गा अपने देश तथा राज्य के लिए कुछ करना चाहती है । दुर्गा एक साहसी नारी है । राजगद्दी की सुरक्षा के लिए वह अंग्रेजो के खिलाफ लडने को तैयार होती है । उसकी बहादुरी, वफादारी, देश के लिए मर मिटने की चाह, उसके चरित्र को उजागर करती है । देशभक्ती मन से होती है । जाती उसके आडें नहीं आती है । विष्णू प्रभाकर द्वारा लिखित 'संरक्षक' नाटक में आनंदी प्रमुख पात्र है । हुण सरदारों की बलात्कार कि शिकार बनी है शोषित पीडित जनता को जागृत करने का काम आनंदी करती है

TULJARAM CHATURCHAND COLLEGE BARAMATI
Principal
Tuljaram Chaturchand College
Baramati

लोगो में अपने मातृभूमि के प्रति प्रेम निर्माण करने का काम करती है वह जनता को संबोधित करते हुए कहती हैं, ''मालव नागरिको हमें बहुत खुशी है की आप लोग अपने देश को प्यार करते है आपका सुंदर प्रदेश यमुना, नर्मदा, सरस्वती, शिप्रा जैसी पवित्र नदियोंसे सिंचित है। आज फिर आपके सामने वही स्थिति पैदा हो गई है जो छह सों वर्ष पहले उस मालवीर के सामने पैदा हो गई थी उस समय इस प्रदेश को शको ने अपने पैरो से कुच डाला था। आज हुन इसे रोंद रहे है।''[९] आनंदी का देश प्रेम इससे उजागर होता है। प्रस्तुत नाटको में देशभक्ति की भावना उच्च कोटी की है। इन नारियों नें अपना जीवन मातृभूमि के लिए समर्पित किया। देश को विकसित करने के लिए देशभक्ती महत्वपूर्ण होती है। हम अपनी मातृभूमि को कभी नहीं भूल सकते। जिस तरह हम अपनी माँ को प्यार करते हैं, उसी तरह देश के प्रति भी हमारा प्यार स्वाभाविक हैं। देशभक्ती में देश के करोडो लोगों के कल्याण की भावना होती है यह पवित्र भावना हैं यह देशप्रेम अपने आप पैदा होता है। हर सांस में स्वर में देशभक्ती की झंकार होती है। मैथिलीशरण गुप्त ने ठीक कहा है - 'हृदय नहीं वो पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।' प्रकृति की हर चीज इस मातृभूमी के लिए कुर्बान होना चाहती हैं तभी तो माखनलाल चतुर्वेदी की कविता में कवि कहता हैं -

''मुझे तोड लेना वनमाली
उस पथ पर देना तुम फेंक
मातृभूमि पर शिश चढा ने
जिस पथ जावे वीर अनेक।''

धन्यवाद

संदर्भग्रंथ :

१. हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ.माधव सोनटक्के, पृष्ठ - क्र. २८०
२. इंडिया टुडे, साहित्य वार्षिकी (१९९६-१९९७) प्रभू चावला, संपादक, पृष्ठ क्र. - २३
३. घाटियां गुंजती है, डॉ.शिवप्रसाद सिंह, पृष्ठ क्र. - ५२
४. नेफा की शाम, ज्ञानदेव अग्निहोत्री, पृष्ठ क्र. - ४७
५. वही, पृष्ठ क्र. - ७८
६. आम्रपाली, रामवृक्ष बेनीपुरी, पृष्ठ क्र. - ११२
७. संरक्षक, हरिकृष्ण प्रेमी, पृष्ठ क्र. - १३०
८. वही, पृष्ठ क्र. - १३०
९. गांधार की भिक्षुणी, विष्णू प्रभाकर, पृष्ठ क्र. २४

***

Principal
Tuljaram Chaturchand College
Baramati
TULJARAM CHATURCHAND COLLEGE BARAMATI